नबी (ﷺ) की
नमाज़ का तरीक़ा

लेखक

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़
(रहिमहुल्लाह)

अनुवादक

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

www.islamhouse.com

1428-2007

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على عبده ورسوله محمد ، وآله وصحبه.

أما بعد:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के तरीक़ा के बयान में यह कुछ संछिप्त बातें हैं, मैं ने चाहा कि प्रत्येक मुसलमान पुरूष एवं स्त्री की सेवा में इन बातों को प्रस्तुत कर दूँ, ताकि इन से अवज्ञत होने वाला प्रत्येक व्यक्ति नमाज़ के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करने का प्रयास करे, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي))

"तुम उसी तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है।" (सहीह बुख़ारी)

अब नमाज़े नबवी का तरीक़ा पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है:

1. नमाज़ी अच्छी तरह (मुकम्मल) वुज़ू करे, अच्छी तरह वुज़ू का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जिस प्रकार वुज़ू करने का आदेश दिया है उसी प्रकार वुज़ू किया जाए, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फरमान है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا قُمۡتُمۡ إِلَى ٱلصَّلَوٰةِ فَٱغۡسِلُواْ وُجُوهَكُمۡ وَأَيۡدِيَكُمۡ إِلَى ٱلۡمَرَافِقِ وَٱمۡسَحُواْ بِرُءُوسِكُمۡ وَأَرۡجُلَكُمۡ إِلَى ٱلۡكَعۡبَيۡنِۚ﴾

[المائدة:٦]

"ऐ ईमान वालो ! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुँह को और अपने हाथों को कोहनियों समेत धो लो, और अपने सरों का मसह करो, और अपने पाँवों को टखनों समेत धो लो।" (सूरतुल माईदाः६)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((لَا تُقْبَلُ صَلَاةٌ بِغَيْرِ طُهُورٍ))

"वुज़ू के बिना कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती।"
(सहीह मुस्लिम)

इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उचित ढंग से नमाज़ न पढ़ने वाले आदमी से फरमायाः

((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلَاةِ فَأَسْبِغ الْوُضُوءَ))

"जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अच्छी तरह (मुकम्मल) वुज़ू करो।"

2. नमाज़ी जहाँ कहीं भी हो अपने पूरे शरीर के साथ क़िब्ला -खाना कअ्बा- की ओर अपना मुँह कर ले और फर्ज़ या नफ्ल जो नमाज़ पढ़ना चाहता हो दिल से उस की नीयत करे, ज़ुबान से नमाज़ की नीयत न करे, क्योंकि ज़ुबान से नीयत करना (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से साबित (प्रमाणित) नहीं है, बल्कि वह बिद्अत है, इस लिए कि ज़ुबान से नीयत न तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने की है और न ही आप के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने। नमाज़ी अगर इमाम या अकेले नमाज़ पढ़ने वाला है तो अपने सामने सुत्रा (अर्थात लकड़ी या कोई अन्य चीज़ जो नमाज़ी और उस के सामने से गुज़रने वाले के बीच आड़ और पर्दे का काम दे) रख ले;

क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका आदेश दिया है।

क़िब्ला की ओर मुँह करना नमाज़ के लिए शर्त है, सिवाय कुछ परिचित मसाईल के जो इस से मुस्तसना (भिन्न) हैं और वह अहले इल्म -विद्वानों- की किताबों में उल्लिखित हैं।

3. **"अल्लाहु अक्बर" कहते हुए** तक्बीर तहरीमा कहे और अपनी निगाह सज्दा की जगह पर रखे।

4. **तक्बीर तहरीमा कहते समय** अपने हाथों को मोंढों तक या कानों की लौ तक उठाए।

5. **अपने दोनों हाथों को सीने पर** इस प्रकार रखे कि दायाँ हाथ बायें हाथ की हथेली, कलाई और बाजू पर हो, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसा ही साबित है, जो वाइल बिन हुज्र और क़बीसह बिन हुल्ब ताई की हदीस में वर्णित है जिसे उन्हों ने अपने बाप हुल्ब ताई के वास्ते से रिवायत किया है।

6. **इस के बाद नमाज़ी के लिए मसनून है** कि दुआ-ए-इस्तिफताह -सना- पढ़े, दुआ-ए-इस्तिफताह यह है:

((اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنْ الدَّنَسِ اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ))

उच्चारण:- अल्लाहुम्मा बाइद बैनी व बैना खतायाया कमा बाअत्ता बैनल मश्रिक़े वल मग़्रिब, अल्लाहुम्मा नक़्क़िनी मिनल खताया कमा युनक़्क़स्सौबुल अब्यज़ो मिनद्–दनस, अल्लाहुम्मग़्सिल खतायाया बिल्माये वस्सल्जे वल बरद।

"ऐ अल्लाह ! तू मेरे बीच और मेरे गुनाहों के बीच ऐसी दूरी कर दे जैसी दूरी तू ने पूरब और पश्चिम के बीच की है। ऐ अल्लाह ! मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पवित्र कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता है। ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाहों को पानी, बरफ और ओलों से धुल दे।"
(बुखारी व मुस्लिम)

और अगर चाहे तो इस दुआ की जगह यह दुआ-ए-इस्तिफताह पढ़े:

((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ))

उच्चारणः– सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारकस्मुका व तआला जद्दुका व ला इलाहा गैरुका।

"ऐ अल्लाह ! तू पाक है और हम तेरी प्रशंसा करते हैं, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी (महिमा) शान ऊँची है, और तेरे सिवा कोई सच्चा मअ्बूद (पूज्य) नहीं।" (नसाई)

और अगर इन दोनों दुआवों के अतिरिक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित कोई और दुआ-ए-इस्तिफताह पढ़े तो कोई हरज की बात नहीं, बल्कि श्रेष्ठ यह है कि कभी कोई दुआ-ए-इस्तिफताह पढ़े और कभी कोई दुआ-ए-इस्तिफ्ताह, क्योंकि इस से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुकम्मल पैरवी हो जाती है। इसके बाद "**अऊज़ो बिल्लाहि मिनश् - शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**" पढ़ कर स ूरतुल फातिहा पढ़े, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ))

"जिस ने सूरतुल फातिहा नहीं पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं।" (सहीह मुस्लिम)

सूरतुल फातिहा के बाद जह्री (ज़ोर से पढ़ी जाने वाली) नमाज़ों में ऊँची आवाज़ से और सिर्री (धीमी आवाज़ से पढ़ी जाने वाली) नमाज़ों में धीमी आवाज़ से "**आमीन**' कहे। फिर कुर्आन से जो कुछ भाग याद हो उसे पढ़े, अफज़ल यह है कि जुहर, अस्र, और इशा की नमाज़ों में सूरतुल फातिहा के बाद अवसाते मुफस्सल (सूरत **अम्मा** से सूरत **लैल** तक) से पढ़े, फज्र में तिवाले मुफस्सल (सूरत **क़ाफ़** से सूरत **मुरसलात** तक) से और मग़रिब में क़िसार मुफस्सल (सूरत **जुहा** से सूरत **नास** तक) से, और कभी कभार तिवाले मुफस्सल या अवसाते मुफस्सल से पढ़े जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसा साबित है। सुन्नत का तरीक़ा यह है कि अस्र की नमाज़ जुहर से हल्की हो।

7. अल्लाहु अक्बर कहते हुए और अपने हाथों को मोंढों तक या कानों की लौ तक उठाते हुए रूकूअ करे, रूकूअ में सर को पीठ की बराबरी में कर ले और हाथों को घुटनों पर इस तरह रखे कि अंगुलियाँ फैली हुई हों, रूकूअ इतमिनान से करे और यह दुआ पढ़ेः

"سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ" (सुब्हाना रब्बियल-अज़ीम)

पाक है मेरा परवरदिगार जो बड़ी अज़मत वाला है।

अफज़ल यह है कि ये दुआ तीन बार या इस से अधिक बार दुहराये, और इस दुआ के साथ ये दुआ पढ़ना भी मुसतहब है:

"سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي"

उच्चारण: सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका, अल्लाहुम्मग़–फिर्ली।

"ऐ हमारे पालनहार अल्लाह! तो पाक-पवित्र है, हम तेरी प्रशंसा करते हैं, ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे।"
(सहीह मुस्लिम)

8. नमाज़ी अगर इमाम या अकेला है तो **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** (समिअल्लाहु लिमन हमिदह) कहते हुए और अपने हाथों को मोंढों तक या कानों की लौ तक उठाते हुए रूकूअ से अपना सर उठाए और क़ौमा में यह दुआ पढ़े:

((رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ، مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ))

उच्चारणः– रब्बना व लकल हम्दो, हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फीह, मिलअस्समावाते व मिलअल अर्ज़े व मिलआ मा बैनहुमा व मिलआ मा शेअ्ता मिन शैइन बअ्दो।

"ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ है, बहुत अधिक, पवित्र और बरकत वाली तारीफ, आकाश के बराबर, धरती के बराबर और आकाश और धरती के बीच जो कुछ है उसके बराबर, और जो कुछ तू इसके बाद चाहे उसके बराबर।"

और अगर इसके बाद इस के उपरान्त निम्नलिखित दुआ भी पढ़ ले तो बेहतर है, इस लिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ सहीह हदीसों में ये दुआ पढ़ना भी साबित हैः

((أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ، أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ - وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ - اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

उच्चारणः– अहलस्सनाये वल मज्दे, अहक़्क़ो मा क़ालल अब्दो, व कुल्लोना लका अब्दुन, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा आतैता वला मोअ्तिया लिमा मनअ्ता वला यन्फओ ज़ल–जद्दे मिनकल जद्दो।

"ऐ तारीफ और बुज़ुर्गी वाले, सब से सच्ची बात जो बन्दे न कही-और हम सब ही तेरे बन्दे हैं- यह है, ऐ अल्लाह जो तू दे दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी पद वाले (माल दार) को उसका पद (मालदारी) तुझ से कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकता।"

नमाज़ी अगर मुक़्तदी है तो रूकूअ से सर उठाते समय "**رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ...**" **रब्बना व लकल-हम्द...** से अन्त तक पिछली दुआयें पढ़े।

मुसतहब है कि नमाज़ी रूकूअ के बाद क़ौमा में उसी प्रकार अपने सीने पर हाथ रख ले जिस तरह रूकूअ से पहले क़ियाम की हालत में रखा था, क्योंकि वाईल बिन हुज्र और सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अनहुमा की बयान की हुई हदीसें इस अमल के साबित होने पर दलालत करती हैं

9. अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे में जाए, और अगर हो सके तो हाथों से पहले घुटनों को ज़मीन पर रखे, किन्तु अगर इस में कठिनाई हो तो घुटनों से पहले हाथों को ज़मीन पर रखे, सज्दे में दोनों पैर और दोनों हाथ की अंगुलियों को क़िब्ला की ओर रखे और हाथ की

अंगुलियों को आपस में मिलाए हुए हो, सज्दह सात अंगों पर होना चाहिएः पेशानी नाक समेत, दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पैर की अंगुलियों का भीतरी भाग, और सज्दे में ये दुआ पढ़ेः

"**سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى**" (सुब्हाना रब्बियल आला)

पवित्र है मेरा पालनहार जो सब से बुलन्द है।

इस दुआ को तीन बार या इस से अधिक बार कहना मस्नून है, और इस दुआ के साथ ये दुआ पढ़ना भी मुस्तहब हैः

"**سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي**"

उच्चारणः- सुब्हानका अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहमदिका, अल्लाहुम्मग़्फिर्ली।

ऐ अल्लाह! तू पाक-पवित्र है, हम तेरी प्रशंसा करते हैं, ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे।''

सज्दे में अधिक से अधिक दुआ करे, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान हैः

((فَأَمَّا الرُّكُوعُ فَعَظِّمُوا فِيهِ الرَّبَّ عَزَّ وَجَلَّ وَأَمَّا السُّجُودُ فَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ فَقَمِنٌ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ))

"रूकूअ में तो रब की अज़मत और बड़ाई बयान करो, किन्तु सज्दे में अधिक से अधि दुआ करो, क्योंकि ये इस बात के अधिक योग्य है कि तुम्हारी दुआ क़बूल हो जाए।" (सहीह मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ))

"सज्दह की हालत में बन्दा अपने रब से सब से अधिक क़रीब होता है, इसलिए अधिक से अधिक दुआ करो।" (सहीह मुस्लिम)

नमाज़ी को चाहिए कि वह सज्दह की हालत में अपने रब से दुनिया और आखिरत की भलाई का सवाल करे, चाहे फर्ज़ नमाज़ पढ़ रहा हो या नफ्ल।

इसी प्रकार वह सज्दह की हालत में बाजुओं को पहलू से, पेट को रानों से और रानों को पिंडलियों से दूर रखे,

और बाज़ुओं को ज़मीन से उठाए रखे, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلَا يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ))

"सज्दे इतमिनान से करो, और तुम में से कोई व्यक्ति अपने बाज़ुओं को कुत्ते की तरह ज़मीन पर न बिछाए।" (सहीह बुखारी व मुस्लिम)

10. **अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे** से सर उठाए और बायें पैर को बिछा कर उसी पर बैठ जाए, और दायें पैर को खड़ा रखे, और अपने हाथों को रानों और घुटनों पर रख ले, और यह दुआ पढ़े:

((رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي ،وَاهْدِنِي، وَارْزُقْنِي، وعافني، واجبرني))

उच्चारण:- रब्बिग़्फिर्ली, रब्बिग़्फिर्ली, रब्बिग़्फिर्ली, अल्लाहुम्म़्फिर्ली, वर्हमनी, वह्दिनी, वर्ज़ुक़्नी, व-आफिनी, वज्बुर्नी।

ऐ मेरे पालनहार! मुझे बख्श दे, ऐ मेरे पालनहार! मुझे बख्श दे, ऐ मेरे पालनहार! मुझे बख्श दे, ऐ अल्लाह! मुझे बख्श दे, मुझ पर दया कर, मुझे हिदायत दे, मुझे रोज़ी दे, मुझे आफियत में रख, और मेरे नुक़्सान पूरे कर दे।

इस बैठक में बिल्कुल इतमिनान से बैठे यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाए, जैसाकि रूकूअ् के बाद इतमिनान से खड़ा हुआ था; क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रूकूअ के बाद और दोनों सज्दों के बीच देर तक इतमिनान गृहण करते थे।

11. फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए दूसरा सज्दह करे और इस में भी वही सब करे जो पहले सज्दह में किया था।

12. अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे से सर उठाए, और जिस तरह दोनों सज्दों के बीच बैठा था उसी तरह थोड़ी देर के लिए बैठ जाए, इस बैठक को **'जल्सा -ए-इस्तिराहत'** कहते हैं, जो उलमा के सहीतर क़ौल के अनुसार मुस्तहब है, और अगर उसे छोड़ दे तो कोई हरज की बात नहीं, **'जल्सा-ए-इस्तिराहत'** में कोई ज़िक्र और दुआ नहीं है।

फिर अगर कठिन न हो तो अपने घुटनों पर, वर्ना ज़मीन पर अपने दोनों हाथों से टेक लगा कर दूसरी रक्अत के लिए खड़ा हो जाए, खड़ा होने के बाद सूरतुल फातिहा और फातिहा के बाद कुरआन का जो भाग याद हो उस में से पढ़े, फिर जिस तरह पहली रक्अत में किया था दूसरी रक्अत में भी उसी तरह करे।

मुक़्तदी के लिए अपने इमाम से पहल करना जाईज़ नहीं है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को इस से डराया है। तथा मुक़्तदी के लिए अपने इमाम के बिल्कुल साथ-साथ नमाज़ के कार्यों को करना मक्रूह (ना-पसन्दीदा) है, उसके लिए सुन्नत का तरीक़ा यह है कि: उसके कार्य बिना किसी विलम्ब के अपने इमाम के तुरन्त पश्चात और उसकी आवाज़ बंद होने के बाद हों; क्योंकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَلَا تَخْتَلِفُوا عَلَيْهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا))

"इमाम इस लिए बनाया गया है ताकि उसकी इक़्तिदा की जाए, अतः तुम उस पर मतभेद न करो, जब वह तक्बीर कहे तो तुम तक्बीर कहो, जब वह रुकूअ करे तो तुम रुकूअ करो, जब वह **"समिअल्लाहु लिमन हमिदह"** (**سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه**) कहे तो तुम **"रब्बना व लकल हम्दो"** (**رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ**) कहो और जब वह सज्दा करे तो तुम सज्दा करो"। (**बुखारी व मुस्लिम**)

13. अगर नमाज़ दो रक्अत वाली है -जैसे कि फज्र, जुमा और ईद की नमाज़- तो दूसरे सज्दे से उठने के बाद अपने दायें पैर को खड़ा कर के, बायें पैर को बिछाये हुये, दाहिने हाथ को दाहिनी रान पर रखते हुए और शहादत की अंगुली के सिवा सारी अंगुलियों को समेटे हुये बैठ जाये और उसके द्वारा अल्लाह सुब्हानहु के ज़िक्र और दुआ के समय तौहीद का इशारा करे। और अगर दाहिने हाथ की छंगुली और उसके साथ वाली अंगुली को समेट ले और अंगूठे और बीच वाली अंगुली के साथ छल्ला बना ले और शहादत की अंगुली से इशारा करे तो अच्छा है; क्योंकि दोनों तरीक़े नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं। और सर्वश्रेष्ठ यह है कि कभी इस

तरह करे और कभी उस तरह करे। और अपने बायें हाथ को अपने बायें रान और घुटने पर रखे। फिर इस बैठक में तशह्हुद पढ़े, और वह इस प्रकार है:

((التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ))

उच्चारण:- अत्तहिय्यातो लिल्लाहे वस्सला–वातो वत्तैय–इबातो अस्सलामो अलैका अय्योहन्नबिय्यो व रहमतुल्लाहे व–बरकातुहू अस्सलामो अलैना व–अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन अश्हदो अन्–ला–इलाहा इल्लल्लाहू व–अश्हदो अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व–रसूलुह।

"सभी प्रशंसायें, नमाज़ें और पवित्र चीज़ें अल्लाह के लिए हैं, ऐ नबी! आप पर सलाम, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें अवतरित हों, सलाम हो हम पर और अल्लाह के सदाचारी बन्दों पर, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उस के बन्दे और संदेश्वाहक हैं।"

फिर यह दुआ पढ़ें:

((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ))

उच्चारणः– अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद, व अला आले मुहम्मद, कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीम, इन्नका हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद, व अला आले मुहम्मद, कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीम, इन्नका हमीदुम मजीद।

"ऐ अल्लाह! तू रहमत बरसा मुहम्मद पर और मुहम्मद के सन्तान पर जिस प्रकार तू ने इब्राहीम और इब्राहीम की सन्तान पर रहमत बरसाया, निःसन्देह तू सराहनीय और महान है। ऐ अल्लाह! बरकत अवतरित कर मुहम्मद पर और मुहम्मद की सन्तान पर जिस प्रकार तू ने बरकत अवतरित किया इब्राहीम पर और इब्राहीम की सन्तान पर, निःसन्देह तू सराहनीय और महान है।"

और अल्लाह तआला से चार चीज़ों की पनाह पकड़े, चुनांचे यह दुआ पढ़े:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ))

उच्चारण:- अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन अज़ाबि जहन्नम, व मिन अज़ाबिल क़ब्र, व मिन फित्नतिल मह्या वल ममात, व मिन शर्रे फित्नतिल मसीहिद्दज्जाल।

"ऐ अल्लाह! मैं जहन्नम की यातना से, और क़ब्र के अज़ाब से, और जीवन और मृत्यु के फित्ने से, तथा मसीह दज्जाल के फित्ने की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ।"

उसके बाद दुनिया और आखिरत की भलाईयों में से जो चाहे दुआ करे, अगर अपने माँ बाप के लिए या उनके सिवा दूसरे मुसलामानों के लिए दुआ करे तो कोई हरज नहीं। चाहे वह फर्ज़ नमाज़ हो या नफ्ल, इसलिए कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद को तशह्हुद की शिक्षा देते हुये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान आम है:

ثُمَّ لِيَتَخَيَّرْ أَحَدُكُمْ مِنْ الدُّعَاءِ أَعْجَبَهُ إِلَيْهِ فَيَدْعُوَ بِهِ

"फिर वह अपनी पसन्दीदा दुआओं में से जो दुआ करना चाहे करे।" (अबू दाऊद)

और एक हदीस के शब्द इस प्रकार हैं:

ثُمَّ لْيَتَخَيَّرْ بَعْدُ مِنْ الْمَسْأَلَةِ مَا شَاءَ

"फिर वह इस के बाद जो कुछ माँगना चाहे माँगे।" (मुस्लिम)

और यह दुनिया और आखिरत में लाभ पहुँचाने वाली सभी चीज़ों को शामिल है। फिर वह:

((السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ ، السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ))

(अस्सलामो अलैकुम व रह्मतुल्लाह, अस्सलामो अलैकुम व रह्मतुल्लाह)

कहते हुये अपने दाहिने और बायें ओर सलाम फेर दे।

14. अगर तीन रक्अत वाली नमाज़ है; जैसे कि मग़्रिब की नमाज़, या चार रक्अत वाली नमाज़ है; जैसे

कि ज़ुह्र, अस्र और इशा की नमाज़, तो वह अभी ऊपर उल्लिखित तशह्हुद को पढ़े और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे, फिर अपने घुटने का सहारा लेते हुए और दोनों हाथों को अपने दोनों मोंढों के बराबर उठाते हुये, अल्लाहु अक्बर कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए, और दोनों हाथों को अपने सीने पर रख ले, जैसा कि पीछे गुज़र चुका, और केवल सूरतुल फातिहा पढ़े, और अगर ज़ुह्र की तीसरी और चौथी रक्अत में कभी-कभार सूरतुल फातिहा से अधिक भी पढ़ ले तो कोई बात नहीं है, क्योंकि अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका प्रमाण मिलता है। और अगर पहले तशह्हुद के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद नहीं पढ़ता है तो कोई बात नहीं; इसलिए कि पहले तशह्हुद में इसे पढ़ना मुस्तहब (श्रेष्ठ) है अनिवार्य नहीं है। फिर मग़्रिब की तीसरी रक्अत और ज़ुह्र, अस्र और इशा की चौथी रक्अत के बाद तशह्हुद पढ़े, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़े और जहन्नम के अज़ाब से, क़ब्र के अज़ाब से, ज़िन्दगी और मौत के फित्ने से और मसीह दज्जाल के फित्ने से पनाह मांगे, और अधिक से अधिक दुआ करे।

इस जगह और इसके अतिरिक्त अन्य जगहों पर मशरूअ दुआओं में से यह दुआ है:

((رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ))

उच्चारणः– रब्बना आतिना फ़िद्–दुन्या हसा–नह, व फ़िल आखिरते हसा–नह, व क़िना अज़ाबन्नार।

इसलिए कि अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से साबित है कि उन्हों ने कहाः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ((**رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ**)) अधिक से अधिक पढ़ा करते थे, जैसा कि दो रकअत वाली नमाज़ों में गुज़र चुका। लेकिन वह इस बैठक में तवर्रुक करेगा, अपने बायें पैर को अपने दाहिने पैर के नीचे रखे और अपनी सुरीन को ज़मीन पर रखे और अपने दाहिने पैर को खड़ा रखे। क्योंकि इस बारे में अबू हुमैद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस आई है।

फिर "**السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ**" (अस्सलामो अलैकुम व रह्मतुल्लाह, अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह) कहते हुए अपने दायें और बायें ओर सलाम फेर दे।

सलाम फेरने के बाद तीन बार '**अस्तग़्फिरूल्लाह**' कहे, फिर यह दुआ पढ़ेः

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

उच्चारणः– अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामो व मिनकस्सलाम, तबारकता या ज़ल जलाले वल इक्राम।

ऐ अल्लाह! तू सलाम (सलामती वाला) है और तेरी ही ओर से सलामती हासिल होती है, ऐ इज़्ज़त व जलाल वाले तू बड़ी बरकत वाला है।

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ،وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ))

उच्चारणः– ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को व लहुल हम्द, व–हुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर,

अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा आतैता वला मोअ्तिया लिमा मनअ्ता वला यन्फओ ज़ल–जद्दे मिनकल जद्दो, ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह, ला–इलाहा इल्लल्लाह वला नअ्बुदो इल्ला इय्याह, लहुन्नेमतो व–लहुल फज़्ल, व–लहुस्सनाउल हसन, ला–इलाहा इल्लल्लाहो मुख्लेसीना लहुद्दीन, व–लव करिहल काफिरून।

"अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह अकेला है, कोई उसका साझी नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्तिवान है। ऐ अल्लाह! जो तू दे दे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी मालदार आदमी को उसकी मालदारी तेरे अज़ाब से बचा नहीं सकती। अल्लाह की तौफीक़ के बिना कोई ताक़त व शक्ति लाभकारक नहीं। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य (माबूद) नहीं और हम केवल उसी की इबादत करते हैं, नेमत और फज़्ल उसी का है और उसी के लिए उत्तम प्रशंसा है, अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य (माबूद) नहीं, हमारी इबादत उसी के लिए खालिस है चाहे काफिरों को बुरा लगे।

इसके बाद तैंतीस (३३) बार "**सुब्हानल्लाह**", तैंतीस (३३) बार "**अल्हम्दुलिल्लाह**" और तैंतीस (३३) बार "**अल्लाहु अक्बर**" कहे और सौ की गिन्ती इस दुआ से पूरी करेः

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

उच्चारणः- ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को व लहुल हम्द, व-हुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर।

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य (माबूद) नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए सारी प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर शक्तिवान है।"

इसी प्रकार हर फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी, "**कुल हुवल्लाहू अहद**", "**कुल अऊज़ो बिरब्बिल फलक़**" और "**कुल अऊज़ो बिरब्बिन्नास**" पढ़े, फज्र और मग़्रिब की नमाज़ के बाद इन तीनों सूरतों को तीन-तीन बार पढ़ना मुस्तहब है, क्योंकि इस बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहीह हदीसें आई हुई हैं।

इसी प्रकार उपरोक्त अज़कार के उपरान्त फज्र और मग़्रिब की नमाज़ के बाद दस (10) बार निम्नलिखित दुआ पढ़ना भी मुस्तहब है:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

उच्चारणः– ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को व लहुल हम्द, युह–यी व–युमीतो व–हुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर।

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य (माबूद) नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए सारी प्रशंसा है, वही मारता और जिलाता है, और वह हर चीज़ पर शक्तिवान है।"

इस लिए कि यह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है।

इमाम होने की सूरत में तीन बार "**अस्तग़फिरूल्लाह**" और (**اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**) पढ़ने के बाद उसे मुक़्तदियों की ओर मुतवज्जेह होना चाहिए, फिर ऊपर उल्लिखित शेष दुआये

पढ़नी चाहिए, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित बहुत सारी हदीसें इस बात पर दलालत करती हैं, जिन में से एक सहीह मुस्लिम में वर्णित आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस है। उपरोक्त उल्लिखित सभी अज़कार एवं दुआयें सुन्नत हैं, अनिवार्य नहीं हैं।

प्रत्येक मुसलमान पुरूष और स्त्री के लिए जुहर की नमाज़ से पहले चार रक्अत, जुहर की नमाज़ के बाद दो रक्अत, मग़्रिब की नमाज़ के बाद दो रक्अत, इशा की नमाज़ के बाद दो रक्अत और फज्र की नमाज़ से पहले दो रक्अत पढ़ना मुस्तहब (मसनून) है, ये कुल बारह रक्अतें हुईं, इन को "सुनन रवातिब" (मुअक्कदह सुन्नतें) कहा जाता है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इक़ामत की हालत में इनकी पाबंदी करते थे, किन्तु यात्रा की अवस्था में इन को नहीं पढ़ते थे, लेकिन फज्र की सुन्नत और वित्र की इक़ामत और यात्रा प्रत्येक अवस्था में पाबन्दी करते थे। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे लिए बेहतरीन आदर्श और नमूना हैं, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿لَّقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِي رَسُولِ ٱللَّهِ أُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

"तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (की व्यक्तित्व) में उत्तम नमूना है।" (सूरतुल अहज़ाबः२१)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي))

"तुम उसी तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है।" (सहीह बुख़ारी)

अफज़ल यह है कि सुनन रवातिब और वित्र को घर में पढ़ा जाए, लेकिन अगर कोई मस्जिद में पढ़ता है तो कोई हरज की बात नहीं है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((أَفْضَلُ صَلَاةِ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلَّا الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ))

"आदमी की सर्वश्रेष्ठ नमाज़ उस की घर की नमाज़ है सिवाय फर्ज़ नमाज़ के।" (बुखारी व मुस्लिम)

इन बारह रक्अत सुन्नतों की पाबन्दी जन्नत में प्रवेश के कारणों में से है, क्योंकि सहीह मुस्लिम मे उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से साबित है कि उन्हों ने कहा कि मैं ने

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुये सुना:

((مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي لِلَّهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا غَيْرَ فَرِيضَةٍ إِلَّا بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ))

"जिस ने दिन और रात में बारह रक्अत सुन्नत पढ़ा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर बनाए गा।" (सहीह मुस्लिम)

इमाम त्रिमिज़ी ने इस हदीस की अपनी रिवायत में बारह रक्अतों की वही व्याख्या की है जो हम ने ऊपर उल्लेख किया है।

और अगर अस्र की नमाज़ से पहले चार रक्अत, मग़्रिब की नमाज़ से पहले दो रक्अत और इशा की नमाज़ से पहले दो रक्अत पढ़े तो और बेहतर है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((رَحِمَ اللَّهُ امْرَأً صَلَّى أَرْبَعًا قَبْلَ الْعَصْرِ))

"अल्लाह तआला उस आदमी पर दया करे जिस ने अस्र से पहले चार रक्अत नमाज़ पढ़ी।" (इस हदीस को अहमद, अबू दाऊद, त्रिमिज़ी और इब्ने खुज़ैमा ने रिवायत

किया है, और त्रिमिज़ी ने इसे हसन और इब्ने खुज़ैमा ने सहीह कहा है, और इस की इसनाद सहीह है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلَاةٌ، بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلَاةٌ))، ثُمَّ قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: ((لِمَنْ شَاءَ)) رواه البخاري

"हर दो अज़ानों के बीच नमाज़ है, हर दो अज़ानों के बीच नमाज़ है", फिर आप ने तीसरी बार फरमाया: "उस आदमी के लिए जिसकी इच्छा हो।" (सहीह बुखारी)

और अगर जुहर से पहले चार रक्अत और जुहर के बाद चार रक्अत पढ़े तो बेहतर है; इस लिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है:

((مَنْ حَافَظَ عَلَى أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ وَأَرْبَعٍ بَعْدَهَا حَرَّمَهُ اللَّهُ عَلَى النَّارِ))

"जिस ने जुहर से पहले चार रक्अत और जुहर के बाद चार रक्अत की पाबंदी की, अल्लाह तआला उसे जहन्नम की आग पर हराम कर देगा।" (इस हदीस को इमाम अहमद और अहले-सुनन -अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई आदि- ने सहीह इसनाद के साथ उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है)

इस हदीस का अर्थ यह है कि ज़ुहर के बाद मुअक्कदह सुन्नत के अतिरिक्त दो रक्अत और अधिक पढ़ी जाए; क्योंकि ज़ुहर में मुअक्कदह सुन्नतें चार रक्अत पहले और दो रक्अत बाद में हैं, और जब उसके बाद दो रक्अत और अधिक पढ़ी जाये गी तो उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस में जो बात बयान की गई है उस पर अमल हो जाये गा।

अल्लाह तआला ही तौफीक़ देने वाला है, और अल्लाह की रहमत और सलामती उतरे हमारे पैग़ंबर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर और आप के आल व अस्हाब और क़ियामत तक आप की सच्ची पैरवी करने वालों पर। (आमीन)

अपने रब की रहमत का मुहताज

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ (रहिमहुल्लाह)

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
**atazia75@gmail.com*